परजन हिताय 25

अमित और अनुराग अपने मित्रों के साथ फुटबाल खेल रहे थे तभी अमित की नजर अनुराग के दादाजी पर पड़ी

अरे! वह देखो अनुराग के दादाजी हाथ में कुछ ला रहे हैं।

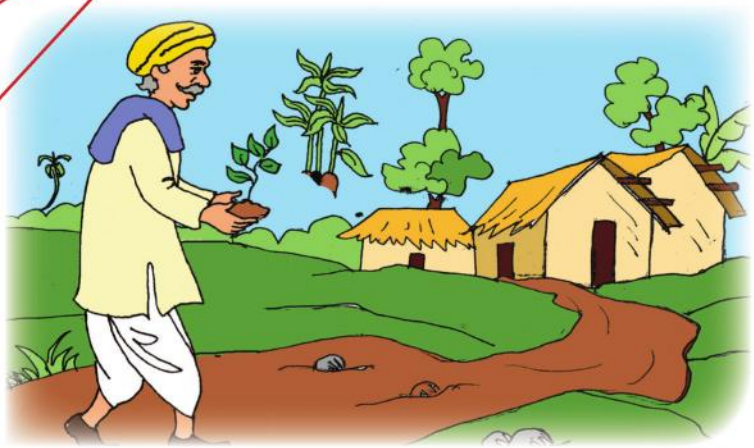

दादाजी यह क्या है? और आप इनको किस लिए लाए हैं ?

शिक्षण संकेत :

शिक्षक छात्रों से चर्चा करें कि श्रीमद्भगवद्गीता में दूसरों के लिए कार्य करने की शिक्षा दी गई है। शिक्षक गीता में आये अन्य पर्यावरण से सम्बन्धित श्लोकों को भी बच्चों को बतलाएँ।

ये आम के पौधे हैं
अमित और मैं इनको
बगीचे में लगाएँगे और
इसके फल खाएँगे

पर दादा जी इनमें
फल तो बहुत समय
बाद आएँगे।

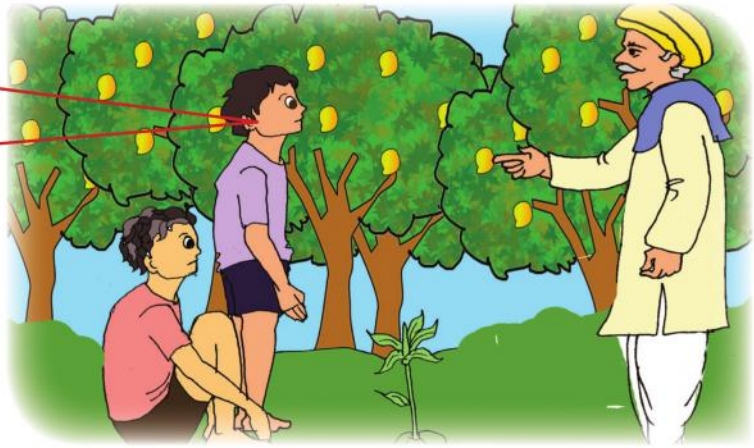

अपने पिता के लगाए
आम के पेड़ों के फल
मैं खा रहा हूँ। मेरे
लगाए पेड़ों के फल
नाती – पोते और
गाँव के लोग खाएँगे।

हमें हर कम अपने लिए ही नहीं कुछ काम दूसरों के लिए भी करना चाहिए श्रीमद्भगवद्गीता से भी हमें यही संदेश मिलता है।

आप ठीक कहते हैं दादा जी आपने जो पेड़ लगाए हैं, उनकी देखभाल अब हम भी करेंगे।

"कार्य कर्म समाचर"

अनुभव - विस्तार

नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. अमित और अनुराग कौन – सा खेल खेल रहे थे?
2. दादाजी के हाथ में क्या था?
3. दादाजी ने पेड़ क्यों लगाए ?
4. क्या आप भी दूसरों का सहयोग करते हैं ? यदि हाँ तो कैसे ? लिखें।

प्रश्न 2. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं जो एक दूसरे के विपरीत अर्थ देने वाले हैं आप इन्हें पहचानें और उनकी जोड़ी बनाएँ –

अ	ब
मित्र	ले जाना
अपना	शहर
लाना	शत्रु
गाँव	पराया

प्रश्न 3. सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

- अमित और अनुराग ..... खेल रहे थे (फुटबाल/लुकाछिपी)
- दादाजी के हाथ में ..... थे। (फल/पौधे)
- पौधे ..... के थे। (आम/अनार)
- हमें कुछ ..... दूसरों के लिए भी करना चाहिए। (नाम/काम)

प्रश्न 4. किसने – किससे कहा –

1. दादाजी, यह क्या है और आप उनको किसलिए लाए है? .....
2. यह पौधे आम के हैं .....
3. हमें कुछ काम दूसरों के लिए भी करना चाहिए। .....
4. इनमें फल तो बहुत समय बाद आएंगे। .....

प्रश्न 5. अब करने की बारी

1. आज आपने किस – किस व्यक्ति का क्या – क्या सहयोग किया है? सोचें और लिखें।
2. आपको कौन – से फल/फूल पसंद हैं? अपने मनपसंद फल अथवा फूल के एक पौधे को लगाएँ और उसमें प्रतिदिन पानी डालें।

निर्देश – अपने मनपसंद पौधे का चित्र बनाकर उसमें रंग भरें।

विविध प्रश्नावली - 3

प्रश्न – 1 'जिसने सूरज चाँद बनाया' कविता की चार पंक्तियाँ सुनाओ।

प्रश्न – 2 शिक्षक बच्चों से कोई एक कहानी सुनकर उस पर प्रश्न कों।

प्रश्न – 3 देखो और लिखो –

शिक्षक कुछ वाक्य श्यामपट पर लिख दें फिर उसे देखकर लिखने को कहें।

प्रश्न – 4 सुनो और लिखो (श्रुतलेख)–

शिक्षक छोटे – छोटे वाक्य बोलकर लिखवाएँ।

प्रश्न – 5 उचित वर्ण पर (ं) लगाकर शब्द पूरा करो –

सुरग

अगूर

उमग

प्रश्न – 6 उचित वर्ण पर (ँ) लगाकर शब्द पूरा करो –

बासुरी　　आख

महगा　　गाव

प्रश्न – 7 कॉलम 'अ' के अनुसार मिलते – जुलते शब्द बनाएँ और लिखें–

अ	ब
नाना	.....
मामा	.....
दादा	.....
काका	.....
चाचा	.....

प्रश्न – 8 वर्णों का स्थान बदलकर नए शब्द बनाओ –

जेब .....

थन .....

ओला .....

प्रश्न – 9 चित्र देखकर नाम लिखो –

र

ढ़नी

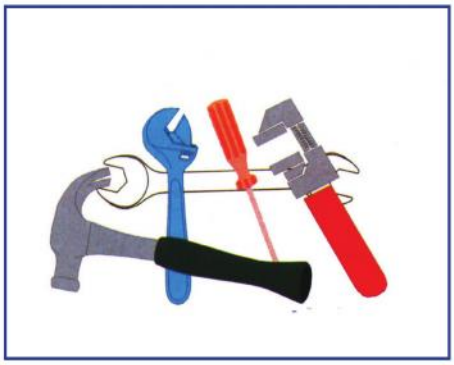

जार

ला

प्रश्न – 10. जोड़ियाँ बनाओ –

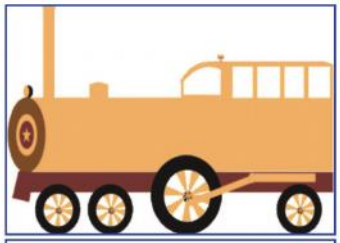

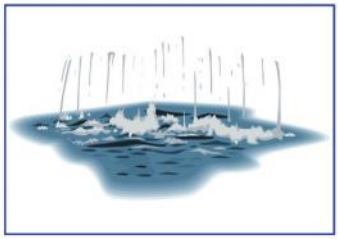
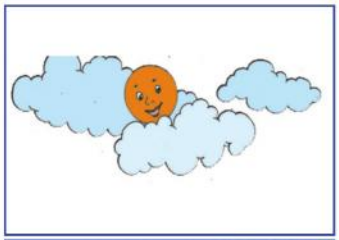

प्रश्न – 11. अपनी पसंद का चित्र बनाओ –

प्रश्न – 12. देखकर शब्द को रिक्त स्थान में लिखे –

कमला ..... पकाओ।

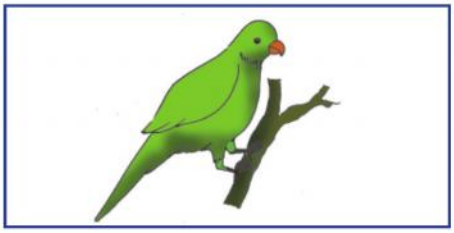 ..... आम खाता है।

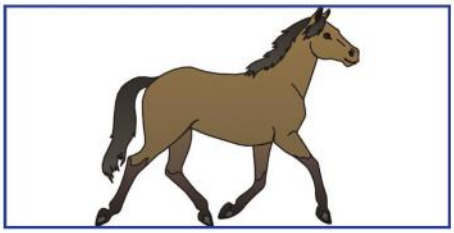 ..... घास खाता है।

..... पानी में तैरती है।

..... काली होती है।

प्रश्न – 13. चित्रानुसार सही वर्ण पर गोल घेरा ◯ लगाओ –

प र फ श

त्र क्ष म ज्ञ

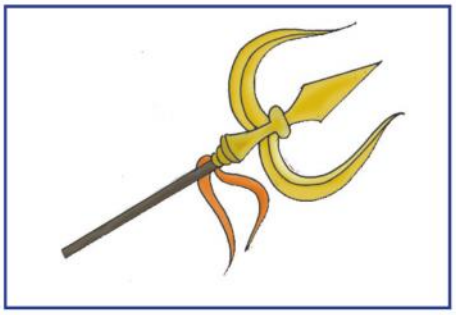

त्र ज्ञ ज म

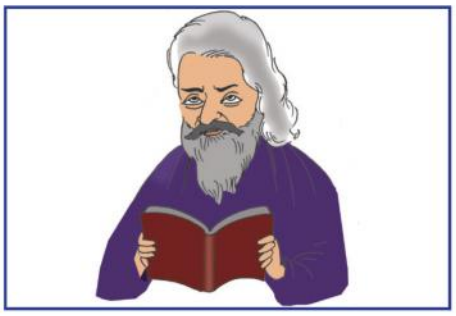

स ज्ञ ज म

ब्रेल : सामान्य परिचय

देवनागरी, गुरुमुखी इत्यादि लिपियों की तरह ही ब्रेल भी एक लिपि है। ब्रेल लिपि का उपयोग दृष्टिहीन व्यक्तियों द्वारा पढ़ने एवं लिखने के लिये किया जाता है। ब्रेल लिपि का अविष्कार लुई ब्रेल द्वारा सन् 1829 में किया गया था ब्रेल लिपि उभरे हुए छः बिन्दुओं पर आधारित होती है, इन छः बिन्दुओं से मिलकर एक सेल बनती है, प्रत्येक सेल में एक वर्ण (अक्षर) लिखा जाता है। ब्रेल लिखने के लिये स्टाइलस एवं विशेष प्रकार की स्लेट का उपयोग किया जाता है जिसमें छः–छः बिन्दुओं के कई सेल बने होते हैं इसे ब्रेल स्लेट कहा जाता है। ब्रेल स्लेट में मोटे कागज़ की सीट पर स्टाइलस के द्वारा लिखा जाता है। ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लिपि में लिखते समय सीधे हाथ उलटे हाथ की ओर लिखा जाता है इससे उभार दूसरी तरफ आते हैं। इन्हीं उभारों का हाथ की उंगलियों की सहायता से छूकर पढ़ा जाता है। ब्रेल के छः बिन्दुओं का क्रम इस प्रकार होता है।

1 ● ● 4
2 ● ● 5
3 ● ● 6

इन छः बिन्दुओं को लेकर 63 अलग–अलग कम्बीनेशन बनाये जा सकते हैं। कुछ कम्बीनेशन निम्न प्रकार हैं–

मात्राऐं और अक्षर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः	ऋ	क	ख	ग
घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध
न	प	फ	ब	भ	म	य	र
ल	व	श	ष	स	ह	क्ष	त्र
ज्ञ	ड़	ढ़					

नोट : उभारे हुए बिन्दुओं को यहां मोटे बिन्दुओं के रूप में दिखाया गया है।

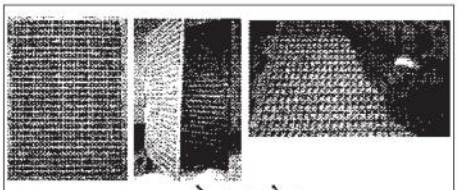

ब्रेल स्लेट

'भारत' ब्रेल में इस प्रकार लिखते है

स्टाइलस

समग्र स्वच्छता अभियान संदेश

1. खाना खाने के पहले हाथ धोएँ।

2. शौच के बाद साबुन से हाथों को अवश्य धोएँ।

3. शौच के लिए शौचालय में ही जाएँ।

4. घड़े में से पानी डंडी वाले लोटे से ही निकालें, पानी में उंगलियॉ नहीं डुबाना चाहिए।

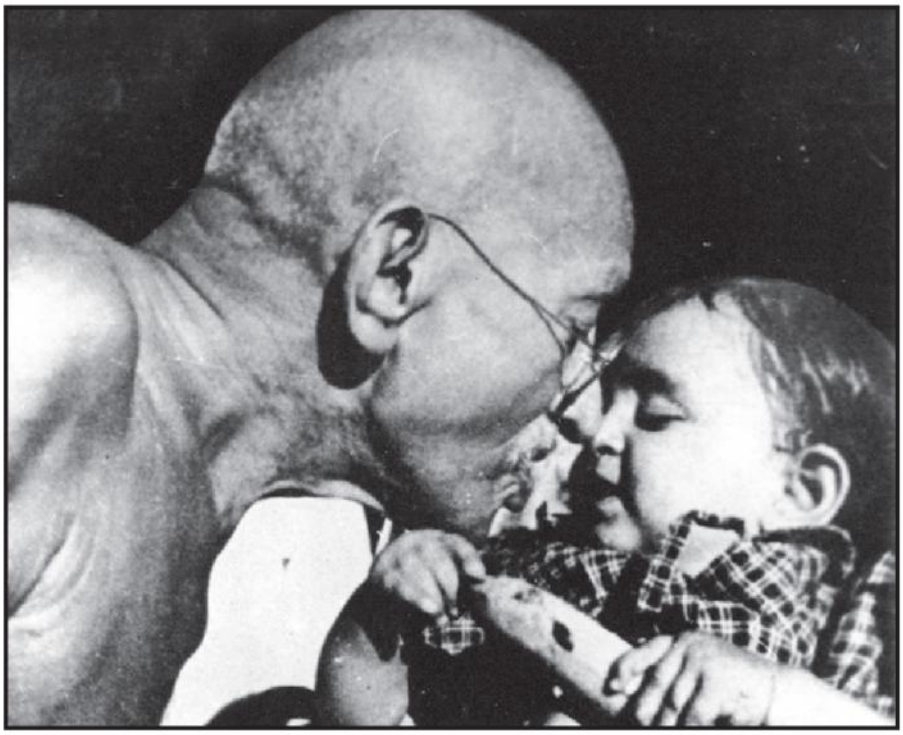

विद्यार्थियों को ऐसी तालीम दी जानी चाहिए जिससे वे संसार के महान धर्मों को आदर के साथ सीख सकें।

-महात्मा गांधी

★

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्

श्री बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय : आनन्दमठ

वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्।
शस्य श्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।
शुभ्रज्योत्स्नाम् पुलकित यामिनीम्।
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्।।
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्।
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।।

राष्ट्रगान

जन–गण–मन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्य–विधाता
पंजाब–सिन्धु–गुजरात–मराठा
द्राविड़–उत्कल–बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि–तरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय–गाथा।
जन–गण–मंगल–दायक जय हे
भारत–भाग्य–विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

(हर देश का अपना एक विशिष्ट झंडा और राष्ट्रगान होता है। ''तिरंगा झंडा'' भारतवर्ष का राष्ट्रध्वज है और ''जनगणमन'' राष्ट्रगान। राष्ट्रध्वज में ऊपर की पट्टी केसरिया रंग की और नीचे की हरे रंग की होती है। बीच की सफेद पट्टी के बीचों बीच २४ शलाकाओं का नीले रंग में गोल-चक्र होता है। केसरिया रंग त्याग का, सफेद शांति का और हरा रंग प्रकृति की सुन्दरता का प्रतीक है। चक्र का स्वरूप अशोक की सारनाथ-स्थित सिंहमुद्रा में अंकित चक्र की भाँति है यह चक्र सत्य और सब धर्मों का प्रतीक है।

राष्ट्रगान की रचना गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने की थी। इसमें संपूर्ण देश के लिए मंगल-कामना है। राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। जब राष्ट्रगान गाया जाये या उसकी धुन बजाई जाये अथवा राष्ट्रध्वज फहराया जाये, तब हमें सावधान की स्थिति में खड़े होकर इसे सम्मान देना चाहिए।)